गोखले का आर्थिक विचार
(Economic Ideas/views of Gokhale)

गोपाल कृष्ण गोखले के प्रमुख आर्थिक विचार निम्न प्रकार हैं :-

(i) **भारत के भारी सैनिक और प्रशासनिक व्यय में कमी करने का आग्रह** :- गोपाल कृष्ण गोखले ने बताया कि भारत का सैनिक व्यय काफी अधिक है। नागरिक प्रशासन के क्षेत्र में भी यूरोपियन अधिकारियों को ऊँचे-ऊँचे वेतन देने से जनता का कुछ भी कल्याण नहीं हो पाता है। उन्होंने यह सुझाव दिया कि एक 'आरक्षित' (Reserve) सेना की स्थापना करके, सैनिक व्यय में कमी करनी चाहिए। उनका यह भी कहना था कि भारतीय अधिकारियों को यूरोपियन अधिकारियों की तुलना में कम वेतन-भत्ते देने होंगे। उन्होंने प्रशासनिक व्यय में कमी करने के उद्देश्य से नागरिक सेवाओं के भारतीयकरण करने की माँग की।

(ii) **भारत में रेलों के विस्तार को प्राथमिकता देने का विरोध** - गोखले ने भारत में रेलों के विस्तार पर होने वाले व्यय का विरोध किया। उनका कहना था कि भारत में रेलों का विकास आर्थिक शोषण करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। रेलों के माध्यम से भारत के गाँवों से अनाज और कच्चा माल बन्दरगाहों तक और वहाँ से विदेश भेजा जाता है तथा विदेशों का पैन्सी समान आयात किया जाता है और गाँवों में इसे ऊँचे दाम पर बेचा जाता है। वही विदेशी समान के आयात किये जाने से स्वदेशी उद्योग नष्ट हो रहे हैं। दस्तकारों और छोटे शिल्पकारों को लघु उद्योगों से हटाकर कृषि कार्य की ओर धकेला जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि विदेशी व्यापारियों को अधिक रियायतें एवं सुविधाएँ देने के कारण रेलों को घाटा हो रहा है। इस प्रकार रेलें भारत के दोहरे आर्थिक शोषण का आधार बन रही हैं।

(iii) **जनता पर करों के भार को कम करने पर विशेष बल** - गोपाल कृष्ण गोखले भारतीय जनता पर ब्रिटिश शासन

के द्वारा निर्धारित करों के भारी बोझ से काफी क्षुब्ध थी। जनता के उपभोग की वस्तुओं पर करों में काफी वृद्धि करने से, जनता को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। उन्होंने कर व्यवस्था में सुधार के लिए कई सुझाव दिये। जिसमें अकाल के समय भू-राजस्व की पूर्णतः माफी, आय-कर से मुक्ति की सीमा में वृद्धि, सूती वस्त्र पर आयात शुल्क समाप्त करने, नमक कर में कमी करना और उसे बाद में पूर्णतया समाप्त करना इत्यादि प्रमुख हैं।

(iv) स्वतंत्र व्यापार (Free Trade) की नीति का विरोध – गोखले का कहना था कि स्वतंत्र व्यापार की नीति ने सभी उद्योगों को बर्बाद कर दिया है। नवीन पद्धति के सामने भारत के पुराने उद्योग-धंधे टिक नहीं पा रहे हैं, जिससे देश की प्रगति अवरुद्ध हो गई है। जिसके कारण लोग पुनः खेती करने के लिए बाध्य हो गये हैं। गोखले का कहना था कि भारत में नवजात उद्योगों को संरक्षण दिया जाना चाहिए तथा संरक्षण नीति को सतर्कता और सकारात्मक दृष्टिकोण से अपनाने पर बल दिया। गोखले की मान्यता थी कि भारतीय उद्योगों को संरक्षण की आवश्यकता है जो यूरोपियन उद्योगों के साथ अनियंत्रित और अवांछनीय प्रतियोगिता से बचाएँ लेकिन एकाधिकारी प्रवृत्तियों और आर्थिक साधनों के केन्द्रीकरण को जन्म न दें। वे ऐसी औद्योगिक नीति के पक्ष में थे, जिसमें स्वतंत्र व्यापार और संरक्षण दोनों ही नीतियों का समावेश हो।

(v) औद्योगिक विकास पर बल – गोखले ने कृषि के साथ ही औद्योगिक विकास पर बल दिया। उन्होंने देश के उद्योग-पतियों से अपील किया कि उद्योग में लगे श्रम में अधिकाधिक कुशलता लाएँ, उत्पादन बढ़ाएँ तथा भारतीय माल के लिए विदेशों में मण्डियाँ खोली जाय। उद्योगों में भाग

Scanned with CamScanner

के मध्यमवर्गीय शिक्षित व्यक्तियों की नियुक्तियों के लिए प्रोत्साहित किया जाए। दूसरी ओर देश के अन्य शिक्षित वर्गों को नई दिशा में प्रशिक्षित किया जाए जिससे औद्योगीकरण के युग में एक नई पीढ़ी तैयार हो सके।

(vi) **ग्रामीण ऋणग्रस्तता के प्रति चिन्ता और कृषि में सुधार पर बल**- गोखले ग्रामीण एवं कृषकों की ऋणग्रस्तता से काफी चिन्तित थे। गोखले जानते थे कि ग्रामीण कृषि संबंधी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, अपनी कृषि भूमि और अन्य साधनों को गिरवी रखकर ही ऋण प्राप्त करते हैं जो उनके लिए प्राण लेवा होती है। गोखले ने सुझाव दिया कि "सहकारी साख समितियाँ" स्थापित कर ग्रामीण और कृषकों को वित्तीय सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए। वे कृषि के क्षेत्र में उत्पादन की तकनीकों में सुधार, उत्पादन कार्य हेतु बीज-खाद और सिंचाई की समुचित व्यवस्था, उत्पादित माल के विक्रय तथा कृषकों के हितों की रक्षा के लिए हस्तक्षेप को उचित मानते थे। उन्होंने ग्रामीण विकास के लिए सभी संभव तरीकों से कुटीर उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहित करने पर बल दिया।

(vii) **वित्तीय विकेन्द्रीकरण और अन्य सुधार** – गोखले वित्तीय विकेन्द्रीकरण के पक्षधर थे। उनका कहना था कि कल्याण कार्यों का भार प्रान्तीय सरकारों पर है लेकिन राजस्व का अधिकांश भाग केन्द्रीय सरकार हड़प लेती है, जो अनुचित है। उनका कहना था कि प्रान्तों के पास पर्याप्त वित्तीय साधन हों। इसके लिए प्रान्तीय बजटों पर विचार करने, प्रान्तीय सरकार को कर लगाने का अधिकार दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त गोखले का आग्रह था कि भारत सरकार की आय तथा व्यय के बीच अधिक संतुलित सांमजस्य स्थापित किया जाय। उनका यह भी कहना था कि आय का अधिक से अधिक न्यायोचित ढ़ंग से वितरण किया जाय।

Scanned with CamScanner